जीवन-दृष्टि

जीवन-दृष्टि के अन्तर्गत चरित्र निर्माण जैसे प्रसंग को लिया है, पहली दृष्टि प्रख्यात आंतरिक अनुसंधान केन्द्र 'इसरो' से जुड़ी है, जो महान वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा वर्णित है। दूसरा प्रसंग हमें बताता है कि किस तरह संसार में एक लक्ष्य होते हुए भी समझ के अभाव में हम झगड़ते हैं। तीसरे प्रसंग में माँ की महत्ता को दर्शाया गया है। तीनों प्रसंगों पर ध्यान दें तो हम व्यक्ति चरित्र निर्माण से राष्ट्र चरित्र निर्माण की ओर जुड़ सकते हैं।

1. धर्म और विज्ञान का सहकार

– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

सन् 1962 की बात है। उन दिनों प्रो. विक्रम साराभाई मेरे गुरु थे। वे अंतरिक्षीय किरणों पर शोध कर रहे थे। उन्हें राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान की स्थापना के लिए भूमध्य रेखा के निकटवर्ती क्षेत्र में बड़े भूभाग की आवश्यकता थी। उन्होंने कई स्थान देखे। कार्य की तमाम आवश्यकताओं के अनुरूप केरल राज्य का थुम्बा क्षेत्र पसंद आया। प्रो. साराभाई वहाँ गए। वहाँ कई गाँव बसे थे, हजारों मछुआरे रहते थे। एक प्यारा प्राचीन सेंट मेरी मगदालेन, पालिथुरा चर्च का स्थान वे चाहते थे। राजनैतिक एवं आधिकारिक तौर पर बहुत प्रयास किए, किन्तु वह स्थान नहीं मिल सका। उन्हीं में से एक सहृदय सज्जन ने प्रो. साराभाई को सलाह दी कि तुम्हारी केवल एक ही व्यक्ति सहायता कर सकता है, स्वयं सम्माननीय फादर डॉक्टर पीटर बर्नार्ड परेरा; त्रिवेन्द्रम के बिशप।

प्रो. साराभाई एक शनिवार को बिशप से मिले और अपनी बात कही। बिशप बोले – ओ विक्रम! तुम मेरा घर माँग रहे हो। बिशप ने कुछ सोचा और मुस्कराए। काम की जटिलता को समझते हुए भी उन्होंने कहा, तुम कल चर्च में आना।

अगले दिन चर्च पहुँचे। बिशप ने अपने शिष्यों से उनका परिचय कराया। उन्होंने कहा, बच्चो! ये एक बड़े वैज्ञानिक प्रो. विक्रम साराभाई हैं। इन्हें अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए 400 एकड़ जगह की आवश्यकता है। ये मेरा घर माँग रहे हैं, मेरे भगवान का घर माँग रहे हैं, मेरे बच्चों का अर्थात् आप सबका घर माँग रहे हैं। यह सुनकर पूरे चर्च में सन्नाटा छा गया। भगवान ही साधन देता है। हम भी तो अपने भगवान से सुख, शांति, समृद्धि की प्रार्थना करते हैं। क्या हम इनकी सहायता कर सकते हैं? तब एक साथ आवाज आई 'आमीन'।

पालीथुरा, थुम्बा में इसरो की स्थापना हुई। चर्च रॉकेट असेम्बली, फिलामेण्ट वाइंडिंग आदि का स्थान बना। बिशप का घर वैज्ञानिकों का स्थान बना। आज प्रो. विक्रम साराभाई नहीं रहे लेकिन जिन्हें भी उन पुष्पों के विकास के लिए सृजनात्मक योगदान का श्रेय दिया जा सकता है, वे स्वयं भी कुछ निराले किस्म के फूल रहे होंगे, जिनके बारे में गीता कहती है :- **"फूलों को देखो। कितनी उदारता से वे सुगंध और शहद देते हैं, बिना किसी चाह के प्रेम और सुंदरता बाँटते हैं। जब अपना काम कर लेते हैं तो चुपचाप गिर जाते हैं। ऐसे फूल बनने का प्रयास करो।" मैंने देखा है कि धर्म और विज्ञान के प्राणवान पुरोधाओं से मानवता का कितना भला हो सकता है।**

2. हम सब एक हैं

एक विद्यालय के तीन छात्रों को सदाचरण और उत्कृष्ट चरित्र के लिए पुरस्कृत किया गया। तीनों को मिलाकर एक ही सिक्का दे दिया गया कि वे जाकर आपस में उसे बाँट लें।

छात्रों में एक भारतीय था, दूसरा पारसी, तीसरा था अँगरेज। एक-दूसरे की भाषा वे नहीं समझते थे, इसलिए सिक्के का बँटवारा एक समस्या हो गई। अँगरेज लड़के ने अपनी भाषा में कहा - 'मुझे अपने हिस्से का वाटरमेलन चाहिए।' पारसी ने अपनी भाषा में कहा - 'मुझे हिंदुवाना चाहिए' और भारतीय लड़के की माँग थी कि मुझे तरबूज मिलना चाहिए। बात काफी बढ़ गई, पर झंझट तय न हुआ।

अंत में तीनों एक ऐसे आदमी के पास गए, जो तीनों भाषाएँ अच्छी तरह समझता था। तीनों ने उससे अपनी-अपनी बात कही। उस व्यक्ति ने वह सिक्का अपने हाथ में ले लिया और बाजार से एक बड़ा-सा तरबूज खरीदकर लाया। उसकी तीन बराबर फाँके करके उसने सर्वप्रथम अँगरेज बालक को बुलाया और एक फाँक देते हुए कहा - यह रहा तुम्हारा वाटरमेलन। इसी प्रकार शेष दोनों को बुलाकर उनकी भाषा में समझाकर पारसी को हिंदुवाना और हिंदू को तरबूज की एक-एक फाँक दे दी। तीनों जब कमरे के बाहर आकर मिले तो पाया कि उन तीनों की इच्छा एक ही थी, एक ही वस्तु के लिए वे देर से लड़ रहे थे।

संसार की स्थिति भी ऐसी ही है, ध्येय सबका एक ही है, पर भाषा, जाति, देश के भेदभाव के कारण परस्पर टकरा रहे हैं।

3. न्यायाधीश की मातृभक्ति

उस समय भारतवर्ष में अँगरेजों का राज्य था। बहुत थोड़े से भारतवासी ऊँचे सरकारी पदों पर नियुक्त हो सके थे। श्री गुरुदास वन्द्योपाध्याय उस समय कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायाधीश थे और साथ ही कलकत्ता विश्व विद्यालय के कुलपति भी थे।

एक बार श्री गुरुदास उच्च न्यायालय में बैठ कर कोई मुकदमा सुन रहे थे। उसी समय एक बुढ़िया वहाँ आई। जिस स्त्री ने बचपन में श्री गुरुदास को दूध पिलाया था, यह वही धाय थी। बाद में वह अपने गाँव में चली गई थी। बहुत दिनों से वह कलकत्ता नहीं आई थी। इस बार ग्रहण पड़ने के कारण वह गंगा-स्नान करने कलकत्ता आई। गंगा-स्नान करके उसके मन में आया कि अपने गुरुदास को मिलती जाऊँ।

गाँव की एक गरीब बुढ़िया मैले कपड़े पहने हुए आई थी, गंगा-स्नान करने से उसके कपड़े भीगे हुए थे। उसने सूखे कपड़े भी नहीं पहने थे। हाई-कोर्ट का चपरासी उसे कमरे के भीतर नहीं जाने देता था। वह उससे हाथ जोड़कर कह रही थी - "भैया! मुझे अपने गुरुदास से मिल लेने दो।" अचानक श्री गुरुदास की दृष्टि दरवाजे की ओर चली गई। वे न्यायाधीश के आसन से झटपट खड़े हो गए।

उनको आते देखकर चपरासी एक ओर हट गया। श्री गुरुदास ने भूमि पर लेटकर उस गरीब बुढ़िया को दण्डवत् प्रणाम किया। सब लोग हक्के-बक्के से देखते रह गए। देहाती बुढ़िया क्या जाने कि उच्च न्यायालय क्या होता है और उसका न्यायाधीश क्या होता है ? उसकी तो दोनों आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। उसने कहा- "मेरे गुरुदास! जीता रह, बेटा।"

श्री गुरुदास ने सबको बताया- 'ये मेरी माता हैं। इन्होंने मुझे दूध पिलाया है। अब आज मुकदमा बन्द रहेगा। मैं इन्हें लेकर घर जा रहा हूँ।' उस बुढ़िया को न्यायमूर्ति गुरुदास आदरपूर्वक अपने घर ले गए। वहाँ उन्होंने उसका बहुत आदर-सत्कार किया। **अच्छे पुरुष वही हैं जो विद्या, पद और बड़ाई पाकर भी अभिमान नहीं करते।**

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. विक्रम साराभाई कौन थे ?
2. लेखक ने अनुसार अच्छे पुरुष कौन होते हैं ?
3. विद्यालय के छात्रों को किस बात के लिए पुरस्कृत किया गया था ?
4. बुढ़िया माँ कलकत्ता क्यों गई थी ?
5. कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायाधीश का नाम क्या था ?
6. 'इसरो' की स्थापना कहाँ और कैसे हुई ?
7. विक्रम साराभाई किस बात पर शोध कर रहे थे ?
8. 'संसार की स्थिति भी ऐसी ही है', के माध्यम से किस स्थिति की बात की गई है ?
9. न्यायाधीश अपने आसन से क्यों खड़े हो गए ?
10. गुरुदास ने बुढ़िया माँ का परिचय किस प्रकार करवाया ?
11. गुरुदास बुढ़िया माँ से किस प्रकार मिले ?
12. धर्म और विज्ञान का राष्ट्र उत्थान में सहयोग है, प्रसंग के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
13. ओछे और अच्छे पुरुषों की क्या पहचान हैं ? वर्णन कीजिए।
14. गुरुदास की कौन-सी विशेषता ने उन्हें महान बनाया ? समझाइए।

योग्यता विस्तार

1. आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं, कारण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. आप ऐसा कौन सा कार्य करना चाहेंगे जिससे आपका नाम भी महान पुरुषों के साथ लिया जाए ?
3. इस पाठ में संकलित प्रसंगों में से आपको कौन सा प्रसंग अच्छा लगा ? कारण सहित लिखिए।
4. ऐसा कोई एक प्रसंग लिखिए जिसने आपके जीवन में प्रेरणा दी हो।

शब्दार्थ

फाँके - टुकड़े, प्राणवान - जीवित, अनुसंधान - खोज,

* * *

समग्र स्वच्छता अभियान संदेश

1. खाना खाने के पहले हाथ धोयें।

2. शौच के बाद साबुन से हाथों को अवश्य धोयें।

3. शौच के लिए शौचालय में ही जायें।

4. घड़े में से पानी डंडी वाले लोटे से ही निकालें, पानी में उंगलियाँ नहीं डुबाना चाहिये।